

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
पद्मसुत उवाच ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥
सुत ॥ १ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥
विष्णु उवाच ॥ २ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥
उवाच ॥ ३ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥
श्रीकृष्ण उवाच ॥ ४ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥
श्रीकृष्ण उवाच ॥ ५ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥
श्रीकृष्ण उवाच ॥ ६ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥

१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०
३१
३२
३३
३४
३५
३६
३७
३८
३९
४०
४१
४२
४३
४४
४५
४६
४७
४८
४९
५०
५१
५२
५३
५४
५५
५६
५७
५८
५९
६०
६१
६२
६३
६४
६५
६६
६७
६८
६९
७०
७१
७२
७३
७४
७५
७६
७७
७८
७९
८०
८१
८२
८३
८४
८५
८६
८७
८८
८९
९०
९१
९२
९३
९४
९५
९६
९७
९८
९९
१००

निधिसकलस्य दुर्गम् ॥ ॐ ॥ वागरेववीः ॥ मालमय ॥ मल
द्याचनकनकमणिमयः नानावस्त्रयद्रविताः नुदुवदिष्टसंगम
धमवृषाडः श्रीवज्रसत्त्वगुर्वीरुयः समवृकावन नमामि कि
वत्तसयमासास्ववृत्तविद्राहकिताः ॥ श्रीगुर्वीरुयसदिमना
थाः वत्तमलुलनिर्यानेयास्मि ॥ ॐ ॥ प्रथमथवलीगुर्वीरुयज
हविताः वयनकमया श्रीवधनिद्याः ॥ कात्रकागनपूर्वविदेहाः न
कात्रकागनजाश्चिद्यः नमयद्रवजयनिः ॥ अंतलनयद्रव्यः वि

१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०
३१
३२
३३
३४
३५
३६
३७
३८
३९
४०
४१
४२
४३
४४
४५
४६
४७
४८
४९
५०
५१
५२
५३
५४
५५
५६
५७
५८
५९
६०
६१
६२
६३
६४
६५
६६
६७
६८
६९
७०
७१
७२
७३
७४
७५
७६
७७
७८
७९
८०
८१
८२
८३
८४
८५
८६
८७
८८
८९
९०
९१
९२
९३
९४
९५
९६
९७
९८
९९
१००

विधिवत्तमहपूषः पाउयदीय वाउयदीय वाउयदिय वाउय
दीयः गऊवत्त पुनूयवत्तः असवत्त लीनत्ता ॥ ॐ ॥ स्वयवत्त
मलिवत्त वक्रवत्त वासर्वनिश्चानमहपूष ॥ ॐ ॥ धनमिदि
सय ॥ लहस्यमलदन ॥ कि काय ॥ धनमिसमाधिया गयाय ॥ गीग
वागपधाक्षयममनीदाल ॥ ॥ आदिमन्यात्रकावविश्वः ॥ श्रीवज्र
नवजसहमीर सैरवमन गिरवसाक ॥ सर्वमलुलसस्तिगं ॥ ॥
जकजाकिनीसर्वगग अयायि नपूडि नवकाचार्य ॥ विनिगमानः

सावाधिसरावः अनरुवसिद्धिप्रदाता ॥ प्रिसनाधिकान्यम
 कुविनामर स्वस्वदवपयिपुः काष्टयायानमृत्तययय २ अ
 यवसवदियाव ॥ ॥ विश्वकलिसमथ गुंकात्रकातः कृष्णान
 स्वराव २ विश्वयंकजमथ अद्ययययः सर्वदवपयिसीक्ति ॥
 ॥ सुववव (क्षेत्रगमयत्रिया रुनयिभूलनथागगवका २ वि
 हडानवायिन तत्वस्वरावः रुलिलगगग (क्षेत्री ॥ ० ॥
 ॥ गगपदक्षेत्री ॥ दाल ॥ ॥ अनिव अनवकवक रुनमा ॥ मत्रमय

वचक्रवाया वजयंकवमवकवसयवा यनिल्यविहवडावाया
 ॥ जामवक्रवयियायः अन्यकवृक्षाआविंगक्षः हववेकवयिः
 याय ॥ वजयवादीआविंगक्षः सर्ववक्रयियाव ॥ ॥ रुमिसदिन
 वीवध्वन काहिरयाहिर अष्टसखान ॥ ॥ अनरुहसु सर्वदवव
 ऊषादधदिगः मयूदं गिवयन्य संराव यितुडानगुक्रयहिकं
 हवाद्यः प्रिगुडा नगुक्रयकयिवा ॥ ॥ विनितुडाननवनगमय
 सायीवः रुलिलगगवकाकावा ॥ ॥ अनिहिशीमगगुववायुवाः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ग्य॥ क्वादि एषा शिवश्रुतावः ऊनामरुद्रानरुयवश्चनमावः
रुयमावृगगधसंराव॥ ० ॥ थनकलसपूजाः जाय धूय निवा
ऊन थनध्वात गीत नागललीग टालदूर्जमान॥ अनूरुवगथा
नालर्वकावरावः वलवृयविनिनविनिनकवसं२ हुंकादंका
ववजामृतमदकंः सफसंभाविनरुनामृतमय चंद्रामृतवसः
वाधिरुसदायकंः सर्वकिनव्यापिनसहजकवसं२ ऊगगमलला
धिग भूयकवृक्षाहव संसावनासंनवित्रकवृपं ॥ वरुयवः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मानमयगंधावसंयुगः संखसंस्कापीनयश्चपियुखं॥ दंकावमः
रुपूषाशुगधन वरुसंस्कापीनविपाककवसं॥ घटमखग
वगफेवृयरावः आरुगमभुकिनीऊववृयं२ रुदिदीसाध्वनः
दवगानचक्र हानसत्त्वमानिमयहृदिऊकिवर्ष॥ पाशादि
आयमन दानपूवसवक्ष समयसत्त्वप्रवर्गित विमर्दकवसं२ म
हागगद्विरुयवाधिविरुवृयः समयसत्त्वहानयक्रवकिरु
गं ० नागरेवरी॥ कलभाचनविधियवपहावाः पूजनया

मिमदउगभाः विविधितयहात्र नृगीमदउगभाः दमनृध-
 धनिसुर्मगला ॥ वक्रामगादकंमजाकिनी समरावसुसावम
 दयनृपं ॥ गन्धसुवसुरिधीलक्ष्मिमहाकालः कुंसप्रमिथिमव
 रुस्यहाः कनकनृपमनिवत्तविरुघ-यं वयसवउयस्यहिमा ॥
 ॥ यक्षेमृगयक्षेत्रत्तसहनः पक्षेउपवि-पक्षेविहि-अदस्कं ना
 जाश्राकृपदूवाकृ-सुसहिता वक्राश्रावार्यमलुन्यास ॥ जाकि
 नीनामाख-सुनाहा-यूपीनिवित्रंवित्रस्यहासंरुताः भनृयुनृवव

अकलक्षवन्नंगः श्रिमगसुखरुलदायुगाहाः नमस्कंशपल
 मृषंकुः मन्त्रकावहानरास्त्रसंरुता ॥ ० ॥ थनकृमृयास
 जाय-धृयु-निवाऊनः मन्त्रपात्रगयः मृथध्यान ॥ वागललीग
 कृफानिगाऊन-यंचहानस्यरावः वंकावक्रवविकृमृत्पनाः निवा
 सिगमांकीवाशिवमामकि सुवसुद्वीनउजोवनी ॥ नृमापि
 श्रीवानृभावसिगास्त्रे-हेषमृमृमादकः श्रानिउयदस्यव-रुनि
 मानसुनसिग ॥ विनयसुनसिगो अकमृखपिवावनिदवी ॥
 मकमृखपिनयनवावनीदवी

॥ दयकरवाच ॥

॥ अष्टादशरजःशिविः कुंकुमयकवानः सत्ररूपद्विगिकव २ पाणी
कृष्णखण्डः धृजगजवर्कः नवमवन्दय्यथमसकव ॥ ॥ अ
पत्रउड्डरुजककठकधनः वज्रवधैखल्लगकमलैग २ पिभूवम
रान्नवजवानगधयः शिगदनूदकमारुय ॥ ॥ उं हहा ह्रीं हकाः
गहव नैहवितवभूः सुस्रस्रस्रमौकावसुलावयः गडाकवृक्षामयः क
मार्मवावृक्षीः पत्रमाशवज्रन्य तथाधापिता ॥ ॥ गनोरुवस्रहि
संकुलुवावृक्षीः पत्रमाशवज्र यद्यमावा ॥ ॥ मथकं

गीतवर्ण

गीतवर्ण

रुन्मास ॥ जाय धूप मथध्यान ॥ वागकनदि ॥ गालयकगली ॥
॥ नीलवर्णवावृक्षीदवीः पिरुजानमामकिः पाणीकृष्णखण्ड
नीदहा ॥ ॥ गनार्कं गनार्कं ॥ नमामि २ श्रीनामकिदवी ॥
॥ वकिकुलकलिशवक्र मधवखणिताः नृपधात्रीरुकिसेपूः
जिता ॥ ॥ स्वस्विजाकवसमृत्पन्ना २ द्विगियकरं अमृतपान ॥
नडाकोवनः गेलाकसूत्रासूत्रवन्दिता ॥ ॥ ॥ मथः जाय धूप ध्यान
न ॥ वागवनि ॥ गालय ॥ ॥ पीतवर्णमामकिदवी विधवायिः

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नडा जोवन गेलाक स
 वसुदेवी ॥ स्वस्ति विजा कवे समस्तना ॥ ॐ नक्रिके वुलकहि
 लावक मयला ॥ नक्रक संकृक गा वरुषिता ॥ ॐ नमामि श्री
 वासुदेवी ॥ सुवर्ण श्री पूज्या मिमना वाटिका ॥ ॐ नमो भगवते
 वसुदेवा ॥ पुष्पामि रक्ता ॥ नमो भगवते सिद्धि मा क प्रद ॥ ॐ
 नमो भगवते ॥ नक्रवर्ण श्री यनाय न सुन्दरी ॥ नमो भगवते सुकुरु नः
 नमो भगवते ॥ सुकुरु देवी वासुदेवी नहामा मकि देवी ॥ ॐ नमो

नमो
 भगवते
 वासुदेवाय

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 जागं धनमदिका गुन उय देवा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 सहस्रयागिनी लेया ह नुतां सुहृत्वा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 लग्नगन्धरीयाः रुनयिवा कवक सवन भूषणी ॥ ॐ नमो भगवते
 वसुदेवा नृणी पूजा ॥ ध्यान ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ हलीगव
 धुगी विमय न सुन्दरी ॥ नडा जोवन धुगी नान ध्वला ॥ सुकुरु देवी मा
 मकि वासुदेवी ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो
 भगवते
 वासुदेवाय

विज्ञापना

इसवृत्तं शुक्लजाग्रीसुदी॥ ॐ ॥ हकालहहलिनवर्तु हाका
लगंधनाभनः जीकात्रनविज्ञमं श्रुमगाकावृत्तवृत्त॥ ॐ
भगवत्पूज्यवद(म) मिलगनधवीयाः रुनयि सुवर्गवर्गीवायगीगा
॥ ॐ ॥ वृत्तिमामकिपूजा॥ अथपात्रपूजा॥ न्यासः जायः धूपः निमा
जन॥ अथध्यान॥ गीत॥ नागवटककाल॥ कहु॥ ॥ पूर्वजाविहीद
वीचकि कहुलकहिः नावक्रमवराहवीतवाविगाः॥ सुसमानसः
रुकिर्तपूजिताः॥ स्वस्वविज्ञाक्रमेसमस्यनादवीजकिही॥ ॐ ॥

पूर्वजाविही

नमामि श्रीजकिहीदवीरुनडाओवर्द्धनिनयसूत्रसुन्दरी॥ ॐ
चतुर्भुजा नामकपालखडांगः दक्षिणोत्तमवृत्तर्हिकादृष्टाकवाव
वदना॥ ॐ ॥ विनयमूककहिः पंचमूद्रासंस्तिगः भगवत्पूज्यवद
रुनजावायगीगा॥ ॐ ॥ अथध्यान॥ नागललीग॥ ॥ दक्षिणा
त्मादवीविष्णुवापिता २ श्रुमगधाननृपंजकिहीदवी॥ ॐ ॥ नमा
मि २ श्रीवात्मादवीपूजयामिमनाराद्धिगा॥ ॐ ॥ उक्तवक्तवगुरु
ऊखडात्र २ दक्षिणोत्तमवृत्तर्हिका॥ ॐ ॥ दृष्टाकवाववदनविन

नमः

卷之四

ब्राह्मकर्मेश्वरनगभापंचमूद्रास्तुतिता ॥ ॐ ॥ भगवतु नमः ॥
 मिलनगनधनियाः स्मरुनरुनरुनसिद्धिमाकप्रदाता ॥ ॐ ॥ भूष
 ध्यान ॥ ॥ नागनाटक ॥ यक्षिम ॥ खलुनाहादवी धियनायनसून्दरी
 रचतुयुक्तुननकुकिन ॥ नमामिश्रदेवीखलुनाहादवी ॥ ॐ
 ॥ भगवतु नमः ॥ मयनसूत्रं ॥ ॐ ॥ वक्षिकुलकमि
 वक्रमयना २ विद्वतीनवित्तीगलाश्रुलंकता ॥ ॐ ॥ भगवतु
 वन ॥ मिलनगनधनीया २ रुनयिवाकवर्कसूत्रनसूत्रयिनी ॥ ॐ

३५३

॥ अथ ध्यान ॥ उल्लस ॥ वागकह ॥ ॥ तू पी सी द वी यिन यन सुन्दरी ॥
न ज जो वन वा ज न द हा ॥ न मा मि र षी तू पी नि द वी ॥ ॐ ॥ व सु
ह उ रु ल न तु कि न क्षे र व सु द वी श्व तू य ॥ उ म्म का ग्री श्व वी ॥ ॐ
उ क व क व सु सु जा ॥ वा म क पा ल र व द्वा जे र द क्रि क्षे उ म तू क र्त्तिक
ध वी या ॥ ॐ ॥ रु का ल न ह लि ग व ह्म ॥ हा का न ग न्ध ना मे न ॥ ज्ञा
का न वी र्य हं ता ॥ श्रु ता का न ॥ ॐ ॥ श न सु त्र व न क्ष ॥ मित्त ग न
ध वी या ॥ रु न यी सि धि व र्ज व र्जा वा र्य गी ता ॥ ॐ ॥ अथ ध्यान

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

पञ्चमहाप्राण

नागरेववी॥ दालक्य॥ लाकंदहनयंचरुनस्वतया २ यंचमृया
नसपंचसात्रीपूजियात्मः॥ बुद्धदेवावलिनयथितुडानवीना॥
ॐ॥ विनमनाप्रकसमयाज्ञानन्द॥ ॐ॥ वीत्रवीत्रव्यवसह
ज्ञानन्द॥ कनकमनासनरुदयाज्ञानन्द॥ ॐ॥ पंचवृक्षयंच
संधस्नानस्वतया २ देवास्त्रननप्रभादितङ्गीउया॥ ॐ॥ उन्मा
ङ्गीस्वभाधनकत्रीन॥ उमनृषश्चनिवित्रमानन्दमूर्ति॥
ॐ॥ अथपंचपावपूजा॥ नागपञ्चकली॥ पंचमहापावसेमया

श्री

नारीमुक्तात्म्या २ दशदिर्गसम्पन्ननाधियात्र॥ समयाज्ञानन्द
रुननिहायि॥ ॥ वीत्रवीत्रव्यवसहस्रानः मधुवमाहनीविष्णु
हरी २ यद्वाक्यवीदानादवीरदानपणियाविप्रनिवाय ॐ
मधुसंधवमार्ककावचक्रः २ वज्रकायविष्णुवाया २ कागजाग्रीमयी
याविष्णुजननीसमयाज्ञानन्दरुनयिहायि॥ ॐ॥ सिंहनादवाजीः
यावदमनप्रसादः ॥ अष्टकाग्निदानपूम्भ २ जानाधनपूम्भवधूववयिः
याः कर्तुं पाचनरुननिहायिः ॐ॥ ॐ निपावपूजा॥ अथकिकल

卷之三

ता. ३५
मय्या जाय शेष ध्यान ॥ नमस्तदादनाट ॥ नमस्तुवमासठविन
कंकाया २ आविकाविइ शिवाय शिशीहनुका ॥ ० ॥ नमामि २ श्री ३
निवायं वजिरुवननाथ ॥ ॐ ॥ वज्रवावाही आविगुप्तमृदय ॥ ॐ
रुद्रवर्धुचतुवंदनयिनय २ विश्वकृषीममृद्ववन्द्यरुद्र ॥ ॐ
॥ जाकिधीनामाखभुवाहानूयीनी २ चतुदवीकीन्दक्रिविचंविवासा ॥
ॐ ॥ रुषिगयटमृदा रुषिगं विलम्बव २ रुनयिअनूयमवज्रहनुक नाठक
दासा ॥ ॐ ॥ रूगिनामकीपूजा ॥ अथदशमासथरु ॥ वाग ॥ सप्रतिष्ठा गा

कनयिका महिम्नाः सगंधादद्यावतः सप्तमिच्छा नाट्यमः सम्राट् महामहोपाध्यायः

विद्यया

जिदवेसमा बृहदिन कवर्त्तव्यं बृहदिन केवमुत्तुल १ वाजिन विरव हो जन
 नी १ वक कर्त्तव्य उवयि निनय नः मावव वुव घन ध्वनि ॥ दवी कवगिक
 पावधवा ॥ ॐ ॥ रुषिगन व नीलमाला १ कमल कवी सदृशियावा
 १ वाजि यिनां वयि सह ऊ संवृष्टिनी ॥ ॐ ॥ वक्रिणीयक (रुद्र) वुवः कलि
 कन्ठ कसार १ हाथ्या वाव कर्त्तव्य उवमयुव १ गज (ना) पूव रुषिनी ॥ ॐ
 रुआय दयान वंद ही पूवः दहिनि हान कलि १ लावां रुषि विवर्द्धि गज
 नरुव नयन ना पूव रुषिनी ॥ ॐ ॥ पद्म वरु पदमी लगन धवीयाः
 नन स्रुषिनी ॥

श्रीदायिगनहायाः कृपादमनासवननमयः अन्त्यागदायगवाहा

वत्रांगलयः कुरुनिपुमिष्टा

प्रावन्नगिनी

गाथायिहामकवीसाश्चनूकवसिद्धिभाकप्रदायनीः प्रथमामिष्टय

वाकलि ॥ ॐ ॥ मृथसिंभुवमधुवपूजा ॥ किमद ॥ मायकाकायका

पधूपनिनाऊन ॥ गुणध्यान ॥ वागकद ॥ गालमार्थ ॥ ॐ यं वाकलिद

वीः नूडादवीघवनी २ सयनसूत्रासूत्रवंदितवत्र ॥ मरुगवगियाद

कमलसूत्रिमलितनापूत्रनूनमूनकावा २ हाउमो ॥ वंश्रा ॥ वनविर

विग ॥ नैपूत्रय ॥ उलाला ॥ निनिश्चिनयगिनयगिननननागा ॥ ॐ

कयैर्निष्ठयवधावीः मूडमालर विमलरुं ॥ स्वदाप्रधानी ॥ मूकमीनं

मरुगवगिदिगंवना

वाला ॥ ॐ ॥ निनसिंभुवधात्री ॥ कर्कलनयन

रनयीगंवाला ॥ ॐ ॥ रनयीसूत्रनवऊ ॥ वाकलीदास्य २ प्रथमामिष्टा

वऊजागीरुंदरुतापासा ॥ ॐ ॥ वागपद्मऊली ॥ दाल ॥ मधुव

समयवऊ ॥ मधुवसंपूर्ण ॥ द्वादशरुऊवउवापियात्र २ जाननूकनू

॥ श्रीसम्यवयागीधी ॥ श्रीयावऊलादवीनूडागावूधीया ॥ ॐ

जकिधीनात्मा ॥ स्वयुगाहावूपिनी २ वाविमात्रचउवापियात्र ॥ ॐ

कायवाकविरु ॥ निनिश्चिनयगिनयगिननननागा ॥ ॐ

कयैर्निष्ठयवधावीः मूडमालर विमलरुं ॥ स्वदाप्रधानी ॥ मूकमीनं

श्रीमद्देवि

जागजागीभीमवीया समवसंखावश्मृष्टसंभोगीहृत्तुभा ॥ ॐ ॥
नागगुंजली ॥ गालमाथ ॥ मूमलपिदत्रसनायूहविनाकिता ॥ प्रित्तुगो
सत्रवाचनप्रकनूपा ॥ ॐ ॥ जाकिनिवत्रनिनिवक्रवेरावनी ॥ ॐ
शीदवीप्रिमकनिधिरुवमागा ॥ ॥ नारिमगुलमारु ॥ सुडानभववी ॥ प्रि
निरुदिनिधिनयनार ॥ विनिगत्वययक्रवप्रित्तुवयापिना ॥ मृखयनित्रं
ऊनकागिनूपा ॥ ॥ सुगुनिमृगुगिवत्रदहिममागा ॥ शीवक्रयागिनी
पादभनभा ॥ ॐ ॥ नागकनदि ॥ गालप्रकगवी ॥ ॥ खठुजागी

सुडका

शीदवी ॥ प्रित्तुडानयापिना ॥ विघ्नमात्रदृष्टदर्थननाशनी ॥ ॐ
नमामिश्रदवीवक्रवावाही ॥ अक्षिसिद्धिजायनीऊगमऊननी ॥ ॐ
॥ पूर्वदत्रगमनकवभूगी ॥ शूनीभानमिनिदवीनीलवभूगी ॥
ॐ ॥ वायुवमाहनिदवी ॥ सीगवभूगी ॥ यश्चिमसंचालिनिदवीलो
लवभूगी ॥ ॐ ॥ नेअन्यसंघाविनीदवी ॥ हविगवभूगी ॥ दहमवधि
कादवी ॥ धूमवभूगी ॥ ॐ ॥ वगुगुऊनकानन ॥ यथेमद्रारुवः
(ॐ ॥ स्वस्वीऊमंरुव ॥ नडांनानिदिगंवना ॥ ॐ ॥ धनदवऊ

ऊन

अंबुकउलाकिणीशनसामिनीकागांवनहानश्वरीशुनिनयदवीः
 प्रिरुडाधप्रविष्ठा॥ ॥ पूर्वउरुवपश्चिमदक्षिणदिगदवीशजा
 किष्ठीदीप्तीनीचउसिकवजिनि॥ ॥ चतुर्दिगमुखरुलनगुद
 वीशमिनिनयदवीनाचदवी॥ ॥ हरिहरवृंक्षरुद्रमूत्रग
 धाश्यादक्षजागिनीसमवसंराव॥ ॥ ॥ वागरेववी॥ गालड
 ऊमान॥ ॥ नमामिश्रजिनथायुकनूयुकचतुर्मुखमूर्तिआवयंक
 नाशयेहानयंवक्षपुस्तवृणाकृष्णमसंघत्रयकृणा॥ ॥ नना

नमामिश्र

इमनाइंकगतसंसात्रउचुविद्यामनाहवःनमामुश्रयंकजिनध्व
 वा॥ ॥ नमामिश्रजीर्णानिपूत्रध्वत्रअद्विसिद्धिवयदायनीशइ
 त्रितहवक्षसर्वपापरयंकवःदानपूष्यध्वत्रभाकप्रदा॥ ॥ वाग॥
 नमामिश्रजीधर्मध्वत्रवागीध्वत्रयादक्षइर्वायत्रिमहिताश्यादक्ष
 नावक्षनूनरूनकावाःसर्वदशायत्रिमहिता॥ ॥ नमामिश्रजीवा
 धध्वत्रमधुत्रयत्रगीवीनिवासिगाशसत्त्वविमाहितइःखविना
 धनप्रक्षमामिजिनचक्रध्वत्रशमहहनागाशमहनागा॥ ॥ ॥

कमलविष्णु

नागनामकवी॥ नालमाध॥ ॥ कमलविकाशितस्तिगियदृष्टास
 नः कमददियवर्गुस्मदहाश्चरुवन्दनकवल्लयदवधानः निगुस
 रिगप्रकाशिता॥ ॥ नमामिश्रीमहामंजरी सकलगुधनाय
 सत्रगुत्रकमतिदहनहानवत्रपदाः सर्वहृद्धाननिधिसागना॥
 ॥ प्रथमकवययथाविगवज्जघनः मूडमात्रिगधवाजिगाश्दि
 तीयकवययगुतीयहानस्कंधः चतुर्थखप्रसवकवयवा॥
 मूरययुग्मपाशेखवनधर्मवाचिनीः चतुर्थवामधनयूरुकाश्चरु

क

रूपमधरु

कमलविष्णु

नमकटगिलप्रकाशित किंलिषठमधस्तेवयिडाया॥ ॥ नी
 वधिवृद्धिहायिनिमित्तरुनकीः सर्वहृद्धानविंरुतांप्रदाश्चरु
 यत्रहं सत्रनमार्गत यत्रमादवर्गुगीगा॥ ॥ ॐ ॥ नागकड
 नीलइंकात्रप्रकाशितकिव(मः उर्ध्वयिंकवकमः श्रीहवज्जयायाः
 जगन्मोक्तका श्रीनिनात्मादवी॥ ॥ ॐ ॥ नित्रवर्धुदवीकवर्गुका
 धवी॥ ॥ ॐ ॥ काटविनाहिनी श्रीविंगमसमाधिः सादधरुज
 कवर्गुकाधवीया॥ ॥ ॐ ॥ रुलविस्त्रिषठषठमूडारुन(मः वा
 ॥ जगन्निवाहिवनरुसेवा॥ ॥ ३

ॐ
श्री
गणेशाय
नमः

धर्मपवीत नललीलसाला ॥ ॐ ॥ वृक्षमहेश्वर नात्रा
यन ॐ नु - वापयिवदुवद्वेवमुमानमर्थन ॥ ॐ ॥ नागहंका
व ॥ गालामाथ ॥ ॥ ॐ आहं धरावमूनिः नीत्रं किमूकशीक
आश्वं वात्रं वादवधिनयनाः वात्रिवंदनरुयंकना ॥ ॥ श्री
देवमहांकावदंकात्रमूनिः अद्विसिद्धिवदना ॥ ॐ ॥ कव
तिखयवखप्रतिभुल मात्रदयनसहाविता ॥ ॥ विपुलद
य पविपय्यात्री ॥ वाधवर्ममूनालारमोविश्रुकात्यजिनव

ॐ
श्री
गणेशाय
नमः

ना ॥ सनयाविममहाविना ॥ ॥ ददुकनाललालकिनाः रुकः
दिलउर्ध्वकथाः रुकंगश्वरवहालविमदहाः लीमसापिनरुयंक
ना ॥ ॥ श्रीदेवमहांकालयिरुडाशवापिगः देवात्तवनवस्थवि
नाश्वनयुववदशः श्रीनागार्जन चवधकमलवन्दिता ॥ ॐ ॥
नागर्धकाव ॥ ॥ धनकविमागत्रधन्यविहिमधुवमाः स्त्रियावसं
धवीरशीलक्रिधनध्वरीयुधनिधि श्रीवकावाच्यनिश्गतामकुन्यास
मधुलालितियाः पूरुनयालकीरुवमात्रधीदवीः पीनवर्गुत्रकम

खषट् रुद्रयाश्चलितमासनदहिनवत्रचलमंरुविगाश्चकथन
सागवेगुभूतिवसावानकत्रल्लिगसूवर्धुकवसःश्चान्नमंरुवीपुः
हापूस्तकमभिमंरुनिलसव्यापिनिभवीगाश्चदिव्यदूपीरुवना
वधीचिगाश्चत्रल्लिविधिवत्रल्लिविहृषिगाश्चदिव्यदूपिरुवनावधी
विनामभिक्षिपिगाश्चलितमयवासील्लिगवज्रयागिलोकध्वजदहिन
नऊनवत्रुनऊश्चदिव्यदूपीरुवनावधीचिगाश्चदिव्यदूपिरुवनावधी
ल्लिगवज्रयागिलोकध्वजदहिन

विन्दुं नन्दसलगत्य उक्तं मासकृष्णपक्षे द्वादशीमिथा ॥ पिता
नसत्कायनं देवायै कृतः सुसाध ॥ ५२ ॥ इन्द्रमन्त्रमाहात्म्यं
सुगतं ध्यायित्वा ॥ ५३ ॥ स्वागिर्वैश्वदेवा रुद्रनामाय प्रिवाद २ सु
कृमिदिनव्यालाथिवस्कायन ॥ ५४ ॥ नृपदेवनागपावस्कायि
नविहान २ श्रीकलविहानरुद्रानयसिद्धि ॥ ५५ ॥ श्रीगणेशमूर्ति
जागृम्यवस्कायनः देवहृदि सांख्यनाड्यं नयति सहस्र ॥ ५६ ॥
॥ ५७ ॥ नागगंधानरुद्रवि ॥ गालकृमि ॥ पूर्वदिग्भवनेन्दुग

समस्तान् दवीवैश्यायहीहंसासनि २ लेखनमहाकालगद्यति
 कुमालवीनक्रयपालयक्रयकलाः प्रकियागमममलिवलिबूह
 धिनायोसथियागिधीमाष्टगक्षः नृपदवनथीमृष्टमममन
 हनप्रगपिभवगक्षः ॥ ५ ॥ उरुमदिगार्वनकालीकलसम
 नः देवावृदायनीवृषवाहणी ॥ ६ ॥ मृगकाक्षकिलिंदिलि
 सममनः दवीकोमानीमयनासनि ॥ ७ ॥ नैजगुकोनलकी
 वज्रममनः दवीविष्णुविगनृजगदि ॥ ८ ॥ दक्षिणदिगीव

नः धामांडकममनः दवीवावाहेमहिषागनि ॥ ९ ॥ पश्चिम
 दिगावनः मृष्टहामममनः दवीवृन्द्यायनि गजवाहनि ॥ १० ॥
 वायुवकाक्षः कवंकवममनः दवीवानुन्याप्रतागनी ॥ ११ ॥
 वृंमोक्षकोक्षः गङ्गावामममनः दवीमहानक्षिर्मिंहगनि ॥ १२ ॥
 ॥ १३ ॥ रागरेवविनालयटकंकाल ॥ ॥ चन्द्रगङ्गममनः शीन
 संवृक्षावाधुकिनागागर्जिममया ॥ १४ ॥ गङ्गावामममनः मृष्ट
 कवृक्षाः घृनिममया गङ्गाकनागा ॥ १५ ॥ वृन्दुर्मममनः वयक्र



ॐ
ॐ
ॐ

ॐ ॥ ह्रीं नमो भगवते ॥ ददिवि विदुषी निः ॥ किं उच्यते नमो भगवते ॥
हामादा मा ॥ ॐ ॥ ह्रीं नमो भगवते ॥ ददिवि विदुषी निः ॥ किं उच्यते नमो भगवते ॥
विदुषी निः ॥ ददिवि विदुषी निः ॥ किं उच्यते नमो भगवते ॥
या ॥ ददिवि विदुषी निः ॥ किं उच्यते नमो भगवते ॥
थानन ॥ ॥ वागकोलाप नमो भगवते ॥ ददिवि विदुषी निः ॥ किं उच्यते नमो भगवते ॥
लपि यवागोः ॥ मं मं निः ॥ किं उच्यते नमो भगवते ॥ ददिवि विदुषी निः ॥ किं उच्यते नमो भगवते ॥
ॐ ॥ ह्रीं नमो भगवते ॥ ददिवि विदुषी निः ॥ किं उच्यते नमो भगवते ॥

गामाद ॥

जवाग यि ॥ ॐ ॥ ह्रीं नमो भगवते ॥ ददिवि विदुषी निः ॥ किं उच्यते नमो भगवते ॥
या ॥ ददिवि विदुषी निः ॥ किं उच्यते नमो भगवते ॥
वंड मं मं कं लं लि सिं ह्रीं ॥ कं यं नमो भगवते ॥ ददिवि विदुषी निः ॥ किं उच्यते नमो भगवते ॥
नमो भगवते ॥ ददिवि विदुषी निः ॥ किं उच्यते नमो भगवते ॥
कं ॥ ह्रीं नमो भगवते ॥ ददिवि विदुषी निः ॥ किं उच्यते नमो भगवते ॥
महि ॥ ददिवि विदुषी निः ॥ किं उच्यते नमो भगवते ॥
ॐ ॥ ह्रीं नमो भगवते ॥ ददिवि विदुषी निः ॥ किं उच्यते नमो भगवते ॥

विष्णुसूक्तम्

उद्दिष्टं च त्रिभिः १ मातृविक्रमस्यिः महासुखलिनः ॥ युक्तं ह्यलंका
शियाः सहकंसं नृपं १ सयत्रविसेयनीः समयंत्रसंकलियां ॥
कुर ॥ वक्रध्वनिः श्रीमित्रपियां १ आडात्रयानिः गमयत्रियां ॥
कुर ॥ गेयत्रयप्रवर्तः विद्युमित्रियां १ कायवाकविलुः विन
कत्रियां ॥ कुर ॥ पीवयित्रयुतः पीयत्रयुतां १ रं नयिवार्कव
कर्मन्वसमाधिः ॥ कुर ॥ वागमृगवः ॥ मालमाधः ॥ विष्णुप्रम
धनित्रविद्यकवायी १ हेमालिंगदाम्नममानीना ॥ रुदिकमृमि

वसाउदिगसूत्रालि १ मृनृहगधदकीदं निशागीः गतिगुस्वतः
पिनी श्रीप्रसंगमिनी १ वृधित्रयवनपूत्रिगवकं १ नृनृकाय
धर्मिककलिलः १ गहृद्वगवद्वपायपियूरवः ॥ ॥ वदसफच
कृशुममिनाडी १ मृनृनृसंरावमहासुखलिनः ॥ कुर ॥ यन
लिमृदानासः ॥ वागविरासः मालमाधः ॥ ॥ धवधवइधवध
वधवः धवयधवयवकिमित्र १ मदमदवकथकसमयः कुरु
नृजागसंवित्रवल ॥ कुरुकुरुवकधर्मसमयः त्वं गालालिकक

[illegible]

क्रियात्रयसम्भवः धनयिकत्वात्रयसंसारमुक्तवानेकमदिया
ममभनेः मकूठकमिदिगंवना ॥ यत्रमालूचः सम्भवलेयाः सह
ऊधुन्दलिमानूकीया २ हसविनाहित्रः वरुवावाहिः रुद्रामहिः
मात्रुभलाः साहिलिप्रकायनः वनमुहमयनः कर्णवरुयि
नंवाया २ गगदीनिवावर्धुः वलिगनाकायाः मत्रुमलुलरुवलि
ना ॥ ॥ यियधनरुवर्धुः क्वादिगनासम्भवः पयिसयिभूना
रुवनालाः हसविनाहित्रः वरुवावाहिः मुक्तविद्रुदधिभुंधावा

ॐ
ॐ
ॐ

॥ गवन्तलिवावकजायिया २ भगयुनूवव (क्षमायाध) ॥ समयासा
नन्दः कलिगधनामलुलः सम्यत्रवकवावाहि ॥ ॐ ॥ गगमाउ
ग्री ॥ दालकमि ॥ ॥ वक्रिवक्रिमादिप्रदाहिनिबभुविशहिथः
कावमूमाघसिद्धिः नगनस्वराव ॥ कयाहनूवः वक्रकवाविः व
नहनकादिगधनानिववभुस्वराव ॥ पकृगधगगतकथधालि
न्दिः सर्वसत्त्वउधवित्रः वक्रिवक्रिमित्र ॥ ॥ हिंथनालमूकः
किहनूः सहकस्वरावः पक्षपायउधवित्रः उमनूस्वराव ॥

ॐ
ॐ
ॐ

॥ मानूग्रीहनूवः नूमुमूकवागः रुनकिणस्वामिनिहनूव
नस्वराव ॥ ॐ ॥ गगगवदगिनि ॥ दालवकमि ॥ वक्रिकुलक
निवावकमभवनरधितगीवः नूमुलनलमित्रमात्रा २ सत्रवक्रवक्रि
लेयारुसविस्वितः गगधगुहलिवंधूनिवात्रा ॥ मूवममिहनूवः
दमानूकात्राः रुगधनाथसहकउलोत्रा ॥ ॥ वक्रकवागतकहाथधः
नियाः कथयिवदूस्वराव ॥ २ संपूतकागिणीकमत्रविहसिगधनाम
हासूस्वमविप्रभाद ॥ ॥ वक्रवावाहिमूलिगनसम्यत्रः नावयि

सप्तमः

वद्विहरेण २ वाक्कलिकालयिकी दकिह नूवः मृदु मृदु लन
प्रभाद ॥ ध्रु ॥ सहस्रसूत्रेति त्रैया गवत्क कर्तृपावा हेनूववत्र
धप्रभाद २ प्रह्लादालिग महेनूअ निवावर्धः विनासयि शुन्य कन
भा ॥ ध्रु ॥ नागदंभा घनामकत्री ॥ यनमा ॥ ॥ सूपतिमभि
नमभुलवक्रा २ उक्तिमकृपयटा कविमान ॥ ॥ सूपतिनातिग
सुयमिनकं १ तदनूचगीतवत्रनमनाहं ॥ ॥ पंचवृद्धात्मकस
वज्रलयायं २ पभादनाठ कविमदिद्यं ॥ जातहित्रकूमहासहना

गुणः

मा २ नूयंतिगीतवत्रनमनाहं ॥ अवकयानमभीषिमहिक्रमा
थवलिवलरुडवलियं ॥ ॥ वृद्धचलिवल वृद्धयुनकं २ नूतः
नीदानरुविक्रस्यं ॥ ॥ वधमिदुनकत्रापत्रिमूयंति मयः
वृद्धं २ वाधिविराडानयावियवितिः मिदं मकलप्रभादं ॥ के ॥
थमिथलूयविधिरुल ॥ ॥ नागगंधावलेनवी मालारुप ॥ ॥
हवसिन्नमकूटकिन्नमनिरासिग वन्ननकृमा २ साहियवकुस
त्वयन्नमभवल यइमयदं ॥ मधसुनिवद्विधिक (धु) गन

ॐ नमः श्री गुरु सत्ताय ॥ उच्छिष्टवलिमाहा ॥ गणेश महा मन्त्र द्वाया को गावो
 किका ॥ आपना गुत्र मन्त्रुल रिसमा धनकाज उच्छिष्टवलि मल्लखनयना क
 ॐ नगा पिथीकाय सर्वविघ्नोपशान्ताय सर्वोपशान्ताय ॥ यहदा घाय
 सकलमालकन्याय ॥ ॐ देवलिंगुक्त २ खखरवाहि २ ॐ देवलिनृधीनेमकुमा
 सादि सर्वोपकनक्षसहि तं पूष्य धूपः दीपा प्रहानवनिंवेष्टु निगुद्वेनी ॥ ॐ
 उच्छिष्टानमः स्वावल्युपहानः दानप्रति सर्वविघ्नोपशान्तिर्यः शक्तिपादि
 कुरु कुरु स्वाहा ॥ ॥ जय धूप ॥ ध्यान ॥ ॐ गजमणिमिश्रयमानननं

उच्छिष्टदेवता प्रणमस्वाः जावनकहसुदय नानावर्णविरासतूर्य धनविप्रग
 दवीसमापन्नामानरावयत ॥ श्री पा पू ॥ ॐ उच्छिष्टाय नमः स्वाहा ॥ ॐ निहार्य
 हेनवाय नमः स्वाहा ॥ ॐ कुरु २ वगालियनमस्वाहा ॥ ॐ महावगालियनमः स्वा
 हा ॥ ॐ आवाहनीयनमस्वाहा ॥ ॐ महा आवाहनीयनमस्वाहा ॥ ॐ सुनापकसि
 यनमस्वाहा ॥ ॐ रुद्रकालियनमस्वाहा ॥ ॐ महाकालियनमस्वाहा ॥ ॐ उच्छिष्ट
 यनमस्वाहा ॥ पू नो ३ ॥ ॐ शाननूष्णमहाप्रता नानावर्णधनवनें उच्छिष्टपि
 यसंरुक्तं उच्छिष्टाय नमः ॥ वलि ॥ श्रीकालमुख ॥ हनं ॥ श्रीपा पू ॥ ॐ उच्छि

छायनमः॥ ॐ नमिनांगहेनवाय स्वाहा॥ ॐ नमूतहेनवाय स्वाहा॥ ॐ वन
हेनवाय स्वाहा॥ ॐ ऊधहेनवाय स्वाहा॥ ॐ उल्मनहेनवाय स्वाहा॥ ॐ कपाल
हेनवाय स्वाहा॥ ॐ हिष्महेनवाय स्वाहा॥ संहानहेनवाय स्वाहा॥ ॐ बुक्का
यनीयनमः॥ माह्वीयनमः॥ कोमानीयनमः॥ वेष्वीयनमः॥ वानोदियनमः
ॐ द्रायनीयनमः॥ बामूडायनमः॥ महालक्ष्मीयनमः॥ ॥ पूनाउ॥ नमिनांगय
नर्वेन्यादि॥ वक्षायमीमहादवीनूद्रायनीवृषवाहिनी कोमानीविष्णुधनया
नीवृष्वरी ॐ द्रायनीवामूडामहानक्षीसर्वगक्षसमंवितां॥ हेनवद्वन्द्वनक्षत्रा
वृषक्षीमहादवीनमस्तु वरुणाग्निगर्भाः॥ सुधा मना हा र्व हि य धर्मा ॥ ॥

धनशापूहाथपूजा॥ नमिकाधनिस्संगुगालपायक॥ इकिची॥ मनु॥ ॐ क क
कंदनकंदरुट् स्वाहा॥ पालागुलिवाकयावलिर्मंगया॥ नैसत्य॥ ॐ वववंधनर
कंदरुट् स्वाहा॥ वायव्या॥ ॐ खखखंदनकंदरुट् स्वाहा॥ ॐ शान॥ ॐ घृघाट
यशकंदरुट् स्वाहा॥ ॥ उपडशुआथास॥ ॐ घृघाटयशकंदरुट् स्वाहा॥ वा
कयाआवलिर्मंगया॥ गालरुना॥ वाकयाथाम ॐ काप्रकातये लखर
गिरगय सासा हियवान ॐ ल्यः॥ धनकागहायक॥ स्वानकिगद गु
नपूजा॥ सखादकविपनधिया॥ कि ननिविपेधिक वलि कीय ॐ तिउकिगवलि

ॐ
नमो
भगवते

नागमात्रा॥ नाग॥ ॥ नकवर्त्तु नकमुखदिहक नकवर्त्तु नुतिनवर्त्त
दहिनरुगगताधनः महावीरवः नमामि श्रीरामसनपत्रमन्त्रव ॥
वामरुपायनधसासनमर्दनीः इत्यपगिसुन्दरीदुवी ॥ ॐ ॥ रुद्र
वर्त्तु इयकालिसहिता २ अर्थनारुपूननाय सुमसुमंगला ॥ ॐ
रुगनससात्रुलनपुसाधसिद्धि २ रुगनमनीवाक्काः गितिहवदहि
म ॥ ॐ ॥ सनगुत्रवनमवलपुसाधसिद्धि २ रावागुरावेनत्र
पुसाधसिद्धि ॥ ॐ ॥ पद्ममात्रगिथिनवकावायः रुनयीन

मृगपरुद्वज्जीनाजागिना ॥ ॐ ॥ ॥ नागकरु ॥ ॥ कालयिव
ताः वारुविविन्या ॥ अनुरुगसर्वदवगिरुतानविना ॥ ॐ ॥ अनुर
रुमरुक्तिन दानुकनेया ॥ ॥ रुदिलविद्धिसिद्धिनाहिपुसाद ॥
ॐ ॥ गंगरुमनात्रकइयगतीः गगदसिखलमालः पडान
क्रीदाना ॥ ॐ ॥ उद्दीगलवन्दानविभ्रलाग साहिलनविम
सि गगदइउमवा ॥ ॐ ॥ पवनपवाले नककलवंधा विप
निनकनून दानुकसिद्धा ॥ ॐ ॥

किनरुज॥

धर्मराज॥

रागविरास॥ गालमा॥ किनरुननिरुगमहल्लिकहं. रगवनिरु
गवन्मगल्लिकहं॥ गवपदकमलंनमामिनिम्यं. दभभनसूत्रकाठिः
कुरुपालं॥ ॐ ॥ यत्रतवसंरुकंरुसंगमाः प्रतियुगमवनिस्त्रुतिः
गायाः॥ सत्रसद्वयविनास्यकूटगहं. सद्दयद्वयद्वहं॥ ॐ ॥ अ
घटिगघटनानिधानकूटं. प्रभमिगकटपूतनादिकालं॥ कयमनिसुः
धियाप्रसादनम्यं. प्रमिदिनमहमानमास्मिबोलः॥ ॐ ॥ ॥ नागक
गालघटक॥ धर्मनाकभासनयमनाकवाहनमानसंजासनविष्णुनिवा

नम॥ ॥ यमांगकविनदभक्राधहीत्ररुयादधिगीत्रमलुलकील॥
ॐ ॥ स्वगपथवधुर्कंउलकर्तुमीमप्रिनयनयध्मद्रारवभा॥ ॐ ॥
कलिभमूदलनर्जनीपाभ. धनवधुक्त्रजृहृहास॥ प्रह्लाककप्रहमी
वीत्रसंष्टग. गद्यवीत्रासेन्यवीत्रव्यत्रसहिगा॥ ॐ ॥ पद्मानकवीत्रवि
प्रांगवीत्र. गेलाकविक्रयहालानलसूर्या॥ ॐ ॥ हनुकवरूपत्रमाश्व
वरु. उप्रीषवलीधुंरुनाकवीत्र. अष्टरुयहवधं. अष्टैध्वरुत्रधं. क
नूगववत्रधंसंगमंभनधं॥ ॐ ॥ समयुत्रननंमस्तकधनधं. रक्षमिः

२५॥ १॥ १॥

अमिनवऊयर्मांगकगीर्ण॥ ॐ ॥ नागमालश्री॥ मालदूर्कमान॥ धू
मांगत्रीवधुफनाली॥ शीषतपिंमालकभाः॥ चिनयन॥ गुंजयिया॥ ॥
शीषतसहगजदूति॥ अकनानावायवेमहावनिपूत्र॥ ॐ ॥ हूं हूं हूं
हूं वउमालविनामिग२रु२रु२कलंकविप्रनित्रवात्र॥ ॥ सम
याज्जात्रकडुयागांवरीदवी२व२वि२वउमूखवदन॥ ॐ ॥ मिग
केकात्रनूप॥ कृपावलीभा॥ रा२पौ२दिकलंक॥ समाकनवदन॥ ॐ ॥
नोडमहावलीपि२वनलरु२म२मत्स्यमांस२वि२न्याहात्र॥ ॐ ॥

२५॥ १॥ १॥

२५॥ १॥ १॥

२नागनावावरी॥ दाहना॥ मालदूर्कमान॥ ॥ लंबकवधलंबादवधि
नयना२स्कंधे॥ भा॥ रा॥ क॥ त्र॥ सिंधू॥ त्र॥ ल॥ पि॥ गो॥ ग॥ ना॥ ता॥ २॥ घा॥ घ॥ त्र॥ न॥ उ॥ त्र॥ हा
थ॥ प॥ त्र॥ धु॥ ध॥ ना॥ २॥ गु॥ रु॥ मू॥ ल॥ जू॥ क॥ सु॥ य॥ धा॥ त्रि॥ गा॥ ॥ ॐ ॥ अं॥ त्र॥ नि॥ सं॥ रु॥ नि
मा॥ ह॥ नि॥ जू॥ क॥ र्ध॥ नी॥ २॥ जू॥ दि॥ म॥ धा॥ क॥ क॥ शु॥ रु॥ क॥ ल॥ न॥ मि॥ गा॥ ॥ ॐ ॥ स्वः
ज॥ म॥ त्र॥ पा॥ माल॥ वि॥ रु॥ व॥ न॥ २॥ ग॥ ध॥ प॥ ति॥ पू॥ कि॥ त्र॥ स॥ र्व॥ का॥ य॥ सि॥ दि॥ ॥ ॐ ॥
अ॥ धि॥ सं॥ स॥ वा॥ सं॥ पू॥ लु॥ २॥ रु॥ य॥ वि॥ प्र॥ ध॥ व॥ त्रि॥ रु॥ डान॥ वा॥ पि॥ गा॥ ॥ ॐ ॥ ॥
२नाग॥ धृ॥ माल॥ माल॥ श्री॥ माल॥ ध॥ मान॥ ॥ ॥ योगां॥ व॥ त्र॥ त्र॥ प॥ द॥ पं॥ क॥ रु॥ भ॥ व॥

श्रीगुरुभक्तसत्त्वः

ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वायः॥ ॥ नागकद्रु ॥ गालघटकंकाल ॥ ॥
श्रीगुरुवज्रसत्त्वसत्त्वपर्यंकस्थितः सकलसंज्ञानशृष्टिकानक
देवं॥ नमोमिश्रीगुरुवज्रसत्त्व ॥ ॐ ॥ यत्रैवं संज्ञानमभु
लापनि विध्यर्पकजनाम प्रकलितदेवं॥ ॐ ॥ गगनसदृश
नृपवन्द्यसदृशवर्णगगननृपविश्वनृप ॥ ॐ ॥ निवृत्तननिः
नाकाननिर्विकल्पनृपः रूपमसकलज्ञानरुनकरुनानां॥ ॐ
॥ प्रकाननद्वययुक्तविरुडाननाथः चतुर्वर्गदायकपर्वकृतिन

श्रीगुरुभक्तसत्त्वः

स्वनृप ॥ ॐ ॥ गगनकाटिरुक्त वामघट्टाधन विविगुचीवत्र
रूपकतरुधितदेवं॥ ॐ ॥ गगनगुरुवज्रसत्त्वप्रदमितभमनः रुष्टि
नशीपनिसूतगुप्तनिरुक्ति ॥ ॐ ॥ ० ॥ नागकद्रु ॥ गालघट
कंकाल ॥ ॥ श्रीनिवृत्तननृपः विध्यस्वनृपश्रीवज्रसत्त्व
॥ नटनिष्ठिवक्रनाथवज्रदवीसहिता ॥ ॐ ॥ यत्रैवं संज्ञानम
धुलापनिः शुक्लानसंज्ञानकूटगगनमारु ॥ ॐ ॥ जाकिनीनाः
माखद्युगाहानृपिणीः चतुर्दवीचतुर्दिशस्थितापत्रविरुहा ॥

ॐ ॥ पूरुल्लिंगसादयवदविंमनिपीरुव्यापिनस्वमत्रीव-पिगुवन
 नाथ ॥ ॐ ॥ काकासादियमदाडीदिगविदिगसस्थिन-सह
 जानन्दनयसूनयः ॥ ॐ ॥ पर्वजिनजिनगधयविहगलोहि
 न-पूजादवीयादसकिकिनीजाले ॥ ॐ ॥ चहुच्चित्रचहुस्तान
 धकर्मभीषादिरिहनेः प्रान्नगप्रासादप्रतिदिगसमर ॥ ॐ
 यन्नवऊकालादिरिहयि प्राकारे-पत्रिहगवहस्यालमम
 हामगुले ॥ ॐ ॥ अरुमभानाछलाकपालसगलोश्वसि

द्विदायके-पत्रिहगसगलोः ॥ ॐ ॥ गयंनिधयमाकपूरः
 गीतः-गननलरुंनमाकुरुलद ॥ ॐ ॥ रुक्षितश्रीपनिसूग
 लसगिविदिग-गुहनिधिवरलवदिगसगने ॥ ॐ ॥ ॥
 नागनाटक ॥ दालदूरुमान ॥ ॥ आलीठयदस्थितश्रीहनुक
 वीत्र-आलीकालीदूयवापयीहनुक ॥ नमामि २ नमामि श्रीहनु
 कवित्र ॥ ॐ ॥ चकनूपाइदयवादि-यिरुअननाथ-प्रतिमः
 स्वपिनयन-वर्तुर्वभूवयन ॥ ॥ पर्ववृद्धयूगकटाशकमे

कटं: विश्वकुलिभजूर्ध्वचन्द्रयुगमकटं॥ ॥रुषिमघटमूद्रा
 विरुगिविरुषिमसफसफमिसोन्दुमनुमालिंगनं॥ ॥जेष्ट
 पिरुवनगमनगमनः अष्टयागिभीगभगमनं॥ ॥नवनस
 नवनाटकनवजीवनः अष्टयागिभीगभगमनं॥ दक्षरुमीश्व
 नदिगववनूपं॥ ॥एकादशानूपनूद्रपदाक्राननूयः द्वादश
 गुरुधनवक्रयंशधनं॥ ॥गजयर्मनूकनूद्रिभूलः वामरव
 द्वांगपाभवर्त्ममूलं॥ ॥भगयुनूवनभकमेलमित्रधनः रु

वामजानस्थितः

नमिभीपमिसूनः रासमिरुकिनः॥ ० ॥ नागकक्रान॥ नाल
 घटकंकाल॥ ॥वामजानस्थितजुवनिनिहिमः दहिनपाद
 स्थितजुवनिनिहिम॥ दहिनकनधनप्रकलितकनवानः वाम
 कनधनगर्जनियाभ॥ ॥नमामिरजुवनवीनः श्रीवभुमहा
 नायकवीन॥ ॥ककनधिनयनलीषधवयनः मानत्रिपूदल
 नरुवरुयहवहं॥ ॥गगधसहधवधूकधुलकधूः मकूटल
 रितगसधूजिनगुधपूरु॥ दंमाकटलीषधजिनसर्वदूधधः रुव

नमामि २ श्रीहरये

रुवमाषधश्रीचन्द्रनाथ॥ ॥ बहुमुखमालरुधितहात्रः पा
यननूपूननरूननसनो॥ रुनतिश्रापतिरुगरुवरुयलीतं॥ रु
स्यतिरुकिमशुवीरगीतं॥ ॐ ॥ ० ॥ नागकज्ञाना॥ नासध
टवंकाल॥ ॥ नमामि २ श्रीहयग्रीवसेवरुयंकनसेवरुवरु
यहनक्षानमानम॥ अमिनागसेवरु वृक्षायमीदवी वृत्रसे
व वृद्रायमीदवीनमानमः॥ प्रचक्षुसेवरु कोमावीदवी काष्ठ
सेवरु वनायायमीदवीनमानमः॥ उन्मल्लसेवरु वानाहीदवीः श्री

स्वतन्त्रः

षष्ठसेवरु वृद्रायमीदवीनमानमः॥ ॥ कपालसेवरु वका
लिकादवीः संहारसेवरु सिंहसनीदवीनमानमः॥ द्वित्रसन
वनपासवस्त्र विनविगरुस्यतिश्रापतिरुनः॥ ॥ नागना
मकनी॥ नालमा॥ ॥ सूत्रनयासूत्रगक्षवन्दिगवत्रक्षः रुवरु
यहनभसुगनसूत्रक्षं॥ ॥ नमामि २ श्रीकनूक्षामयसकलपाप
मयरुगनाभयः॥ ॐ ॥ अत्रुधनिरुसूत्रक्षसूर्यप्ररुधित
स्यमिगप्ररुजिनलमा॥ ॐ ॥ वामकनधनकनककमलः द

नवश्रीनसमस्त

हिना रुयवत्रदानधन॥ ॥ कृष्णसुखस्थितकमलदजा
यनः नवविनाशिन॥ ॥ कटिधनमृगवर्मनिर्मलहृन्धर्म
दक्षिणश्रीसुधर्मसुसत्कर्म॥ ॥ श्रीकनूक्षामयनमीनल्लय
नयः रुनयलासयनामल्लया॥ ० ॥ नाग ॥ गालमाथशा
अवंकायसमरुगोवागहीवर्जपूर्विका॥ अकानकस्वरूपाद्वया
द्वयविराविनी॥ प्रयदवीपिलाकोफायिकाहस्यानवसिनी॥
चलुर्वगिदादवीवउव्रक्तविहाविनी॥ ॥ पक्षेवृद्धमहामः

पुष्पगिरि

कटीयम्भद्रारिर्विरुषिना॥ सफवाधंगसंयुक्ताः अष्टसिद्धिः
प्रदायिका॥ नवजीवनसंयुक्तादमरुमीध्वनीस्मृता॥ द्वाविंश
ल्लकल्लयकामंयमूर्त्तीनिविश्रुता॥ हस्तकृष्णमिवसायांलेनः
मामिवकृयागिनी॥ ॥ नागरेवनी॥ गाल ॥ ॥ पूर्वदिग
स्थितरुगसंहाराः इदंनविपुसन्नासकावीर कृष्णवर्जमहाः
सारुप्रमर्दिनीः धावकपिलत्वप्रभाविना॥ ॥ नमामिग्री
महाः प्रगिसनादवीइष्टनर्जनीपाभचक्रधारी २ सिगवर्जस

(महिमविश्वकमलवक्रपर्यंकमध्यविजयी॥ ५॥ दहि
 नदिगमहामायादवीमहामायवीरुमप्रता २ याकात्रमहास
 नीमरुगाविंतामभिवल्लधानी॥ ५॥ पश्चिमदिगमहामंगानू
 सावित्रीदिव्यारुनभविहृषिता २ चात्रवदनीत्रकवदूचक्र
 ५॥ पद्मासनवदहसु॥ ५॥ उरुवदिगमहाभीगवतीमान
 विहृन्दनीदिव्यनूपी २ अथित्रज्जनावीत्रमित्रसिमहात्रका
 धात्रिसमयहवेतात्रनी॥ ५॥ ॥ सूर्यादिनवग्रहविविध
 ५॥

पूजनीः दीर्घाश्रागाद्यदानपति २ अष्टाविंशतिगात्रकांकद
 वीलाकपालसर्वद्विहवर्षा॥ ५॥ नागकनदिगालयट
 कंकाल॥ ॥ अथसनदहनगायत्रमिसमन्समन्सिद्धका
 वरुवयुवीना॥ ५॥ नटमिसमाश्रित्कानवका॥ ५॥
 वलुवदनदहननयन २ निविशुजलदवधूकुधुलकधू॥ ५॥
 कलदमिषाभविलसिगहसु २ विदलितप्रियुवनप्रिमधुल
 कधः॥ ५॥ गलक्षिमधुलविनिहितजानू २ गलितसकः